पाठ 13

अपराजिता

कभी–कभी अचानक ही विधाता हमें ऐसे विलक्षण व्यक्तित्व से मिला देता है, जिसे देख स्वयं अपने जीवन की रिक्तता बहुत छोटी लगने लगती है। हमें तब लगता है कि भले ही उस अंतर्यामी ने हमें जीवन में कभी अकस्मात् अकारण ही दंडित कर दिया हो, किंतु हमारे किसी अंग को हमसे विच्छिन्न कर हमें उससे वंचित तो नहीं किया। फिर भी हममें से कौन ऐसा मानव है जो अपनी विपत्ति के कठिन क्षणों में विधाता को दोषी नहीं ठहराता। मैंने अभी पिछले ही महीने, एक ऐसी अभिशप्त काया देखी है, जिसे विधाता ने कठोरतम दंड दिया है, किंतु उसे वह नत मस्तक आनंदी मुद्रा में झेल रही है, विधाता को कोसकर नहीं।

उसकी कोठी का अहाता एकदम हमारे बंगले के अहाते से जुड़ा था। अपनी शानदार कोठी में उसे पहली बार कार से उतरते देखा तो आश्चर्य से देखती ही रह गई। कार का द्वार खुला, एक प्रौढ़ा ने उतरकर पिछली सीट से एक व्हील चेयर निकाल कर सामने रख दी और भीतर चली गई। दूसरे ही क्षण, धीरे–धीरे बिना किसी सहारे के, कार से एक युवती ने अपने निर्जीव निचले धड़ को बड़ी दक्षता से नीचे उतारा, फिर वैसाखियों से ही व्हील चेयर तक पहुँच उसमें बैठ गई और बड़ी तटस्थता से उसे स्वयं चलाती कोठी के भीतर चली गई। मैं फिर नित्य नियत समय पर उसका यह आवागमन देखती और आश्चर्यचकित रह जाती–ठीक जैसे कोई मशीन बटन खटखटाती अपना काम किए चली जा रही हो।

धीरे–धीरे मेरा उससे परिचय हुआ। कहानी सुनी तो दंग रह गई। नियति के प्रत्येक कठोर आघात को अति अमानवीय धैर्य एवं साहस से झेलती वह बिते–भर की लड़की मुझे किसी देवांगना से कम नहीं लगी।

मैं चाहती हूँ कि मेरी पंक्तियों को उदास आँखों वाला वह गोरा, उजले वस्त्रों से सज्जित लखनऊ का मेधावी युवक भी पढ़े, जिसे मैंने कुछ माह पूर्व अपनी बहन के यहाँ देखा था। वह आई.ए.एस. की परीक्षा देने इलाहाबाद गया। लौटते समय किसी स्टेशन पर चाय लेने उतरा कि गाड़ी चल पड़ी। चलती ट्रेन में हाथ के कुल्हड़ सहित चढ़ने के प्रयास में गिरा और पहिये के नीचे हाथ पड़ गया। प्राण तो बच गए, पर दायाँ हाथ चला गया। उसी विच्छिन्न भुजा के साथ–साथ धीरे–धीरे वह मानसिक संतुलन भी खो बैठा। दुख भुलाने के लिए नशे की गोलियाँ खाने लगा । केवल एक हाथ खोकर ही उसने हथियार डाल दिए। इधर चंद्रा, जिसका निचला धड़ है निष्प्राण, मांसपिंड मात्र, सदा उत्फुल्ल है, चेहरे पर विषाद की एक रेखा भी नहीं, बुद्धिदीप्त, आँखों में एक अदम्य उत्साह, प्रतिपल–प्रतिक्षण भरपूर जीने की उत्कंट जिजीविषा और फिर कैसी–कैसी महत्त्वाकांक्षाएँ।

''मैडम, आप लखनऊ जाते ही क्या मुझे ड्रग्स रिसर्च इंस्टीट्यूट से पूछकर यह बताएँगी कि क्या वहाँ आने पर विषय माइक्रोबायोलाजी से संबंधित कुछ सामग्री मिल सकेगी?''

''मैडम, आप कह रही थीं कि आपके दामाद हवाई के ईस्ट–वेस्ट सेंटर में हैं। क्या आप उन्हें मेरा बायोडाटा भेजकर पूछ सकेंगी कि मुझे वहाँ की कोई फैलोशिप मिल सकती है?''

यहाँ कभी सामान्य–सी हड्डी टूटने पर या मोच आ जाने पर ही प्राण ऐसे कंठगत हो जाते हैं जैसे विपत्ति का आकाश ही सिर पर टूट पड़ा है। और इधर यह लड़की है कि पूरा निचला धड़ सुन्न है, फिर भी बोटी–बोटी फड़क रही है। ऊँची नौकरी की एक ही नीरस करवट में उसकी प्रतिभा निरंतर डूबती जा रही है। आजकल वह आई.आई.टी. मद्रास में काम कर रही है।

जन्म के अठारहवें महीने में ही जिसकी गर्दन से नीचे का पूरा शरीर पोलियो ने निर्जीव कर दिया हो, उसने किस अद्भुत साहस से नियति को अँगूठा दिखा अपनी थीसिस पर डॉक्टरेट ली होगी।

''मैडम, मैं चाहती हूँ कि कोई मुझे सामान्य–सा सहारा भी न दे। आप तो देखती हैं, मेरी माँ को मेरी कार चलानी पड़ती है। मैंने इसी से एक ऐसी कार का नक्शा बनाकर दिया है, जिससे मैं अपने पैरों के निर्जीव अस्तित्व को भी सजीव बना दूँगी। यह देखिए, मैंने अपनी प्रयोगशाला में अपना संचालन कैसा सुगम बना लिया है। मैं अपना सारा काम अब स्वयं निबटा लेती हूँ।''

उसने मुझे तस्वीर दिखाई। समस्त सामग्री उसके हाथों की पहुँच तक ऐसे धरी थी कि निचला धड़ ऊपर उठाए बिना ही वह मनचाही सामग्री मेज पर उतार सकती थी, किन्तु उसकी आज की इस पटुता के पीछे है एक सुदृढ़ कठिन अभ्यास की यातनाप्रद भूमिका। स्वयं डॉ. चंद्रा के प्रोफेसर के शब्दों में हमने आज तक दो व्यक्तियों द्वारा सम्मिलित रूप में नोबल पुरस्कार पाने के ही विषय में सुना था, किंतु आज हम शायद पहली बार इस पीएच.डी. के विषय में भी कह सकते हैं। देखा जाए तो यह डॉक्टरेट भी संयुक्त रूप से मिलनी चाहिए डॉ. चंद्रा और उनकी अद्भुत साहसी जननी श्रीमती टी–सुब्रह्मण्यम् को। पच्चीस वर्ष तक इस सहिष्णु महिला ने पुत्री के साथ–साथ कैसी कठिन साधना की और इस साधना का सुखद अंत हुआ 1976 में, जब चंद्रा को डॉक्टरेट मिली माइक्रोबायोलाजी में। अपंग स्त्री–पुरुषों में, इस विषय में डॉक्टरेट पाने

वाली डॉ. चंद्रा प्रथम भारतीय हैं।

जब इसे सामान्य ज्वर के चौथे दिन पक्षाघात हुआ तो गर्दन के नीचे इसका सर्वांग अचल हो गया। भयभीत होकर हमने इसे बड़े–से–बड़े डॉक्टर को दिखाया। सबने एक स्वर में कहा, ''आप व्यर्थ पैसा बर्बाद मत कीजिए। आपकी पुत्री जीवन भर केवल गरदन ही हिला पाएगी। संसार की कोई भी शक्ति इसे रोगमुक्त नहीं कर सकती।'' इसके भयानक अभिशाप के बावजूद मैंने विधाता से ये नहीं कहा कि प्रभो, इसे उठा लो, इसके इस जीवन से तो मौत भली है। मैं निरंतर इसके जीवन की भीख ही माँगती रही। केवल सिर हिलाकर यह इधर–उधर देख भर सकती थी। न हाथों में गति थी, न पैरों में, फिर भी मैंने आशा नहीं छोड़ी। एक आर्थोपैडिक सर्जन की बड़ी ख्याति सुनी थी, वहीं ले गई।

एक वर्ष तक कष्टसाध्य उपचार चला और एक दिन स्वयं ही इसके ऊपरी धड़ में गति आ गई, हाथ हिलने लगे, नन्हीं उँगलियाँ मुझे बुलाने लगीं। निर्जीव धड़ को मैंने सहारा देकर बैठना सिखा दिया। पाँच वर्ष की हुई, तो मैं ही इसका स्कूल बनी। मेधावी पुत्री की विलक्षण बुद्धि ने फिर मुझे चमत्कृत कर दिया, सरस्वती स्वयं ही जैसे आकर जिह्वाग्र पर बैठ गई थी। बेंगलूर के प्रसिद्ध माउंट कारमेल में उसे प्रवेश दिलाने में मुझे कॉन्वेंट द्वार पर लगभग धरना ही देना पड़ा।

''नहीं मिसेज सुब्रह्मण्यम्'', मदर ने कहा ''हमें आपसे पूरी सहानुभूति है, पर आप ही सोचिए आपकी पुत्री की व्हील चेयर लेकर कौन पूरे क्लास रूम में घुमाता फिरेगा?''

''आप चिन्ता न करे मदर, मैं हमेशा उसके साथ रहूँगी।'' और फिर पूरी कक्षाओं में अपनी पुत्री की कुर्सी की परिक्रमा मैं स्वयं कराती। वे पीरियड दर पीरियड उसके पीछे खड़ी रहती। प्रत्येक परीक्षा में सर्वोच्च स्थान प्राप्त कर चंद्रा ने स्वर्ण पदक जीते। बी.एससी. किया, प्राणिशास्त्र में एम.एससी. में प्रथम स्थान प्राप्त किया और बेंगलूर के प्रख्यात इंस्टीट्यूट ऑफ साइंस में अपने लिए स्पेशल सीट अर्जित की। केवल अपनी निष्ठा, धैर्य एवं साहस से पाँच वर्ष तक प्रोफेसर सेठना के निर्देशन में शोधकार्य किया। इसी बीच माता–पिता ने पेंसिलवानिया से व्हील चेयर मँगवा दी जिसे डॉ. चंद्रा स्वयं चलाती हुई पूरी प्रयोगशाला में बड़ी सुगमता से घूम सकती थी। लैदर जैकेट के कठिन जिरह–बख्तर में कसी उस हँसमुख लड़की को देख मुझे युद्ध–क्षेत्र में डटे राणा साँगा का ही स्मरण हो आता था। क्षत–विक्षत शरीर घावों के असंख्य किंतु आभामंडित भव्य मुद्रा।

''मैडम, आप तो लिखती हैं, मेरी ये कविताएँ देखिए। कुछ दम है क्या इनमें?''

मैंने जब वे कविताएँ देखीं, तो आँखें भर आईं। जो उदासी उसके चेहरे पर कभी नहीं आने पाई, वह अनजाने ही

उसकी कविता में छलक आई थी। फिर उसने अपनी कढ़ाई–बुनाई के सुंदर नमूने दिखाए। लड़की के दोनों हाथ जैसे दोनों पैरों का भी काम करते हों, निरंतर मशीनी खटखट में चलते रहते हैं। जर्मन भाषा में माता–पुत्री दोनों ने मैक्समूलर भवन से विशेष योग्यता सहित परीक्षा उत्तीर्ण की। गर्ल गाइड में राष्ट्रपति का स्वर्ण कार्ड पाने वाली वह प्रथम अपंग बालिका थी। यही नहीं, भारतीय एवं पाश्चात्य संगीत दोनों में उसकी समान रुचि है। अपने अलबम को अपनी निर्जीव टाँगों पर रख वह मुझे अपने चित्र दिखाने लगी। पुरस्कार ग्रहण करती डॉ. चंद्रा, प्रधानमंत्री के साथ मुसकुराती खड़ी डॉ. चंद्रा, राष्ट्रपति को सलामी देती बालिका चंद्रा और व्हील चेयर में लैदर जैकेट में जकड़ी बैसाखियों का सहारा लेकर अपनी डॉक्टरेट की उपाधि ग्रहण करती डॉ. चंद्रा।

मेरी बड़ी इच्छा थी, मैं डॉक्टर बनूँ। मैं अपंग डॉ. मेरी वर्गीज के सफल जीवन की कहानी पढ़ चुकी थी। परीक्षा में सर्वोच्च स्थान प्राप्त करने पर भी मुझे मेडिकल में प्रवेश नहीं मिला। कहा गया मेरा निचला धड़ निर्जीव है, मैं एक सफल शल्य–चिकित्सक नहीं बन पाऊँगी'' किन्तु डॉ. चंद्रा को प्रोफेसर के शब्दों में, ''मुझे यह कहने में रंचमात्र भी हिचकिचाहट नहीं होती कि डॉ. चंद्रा ने विज्ञान की प्रगति में महान् योगदान दिया है। चिकित्सा ने जो खोया है, वह विज्ञान ने पाया।''

चंद्रा के अलबम के अंतिम पृष्ठ में है उसकी जननी का बड़ा–सा चित्र जिसमें वे जे.सी. बेंगलूर द्वारा प्रदत्त एक विशिष्ट पुरस्कार ग्रहण कर रही हैं–'वीर जननी' का पुरस्कार। बहुत बड़ी–बड़ी उदास आँखें, जिनमें स्वयं माँ की व्यथा भी है और पुत्री की भी, अपने सारे सुख त्यागकर नित्य छाया बनी पुत्री की पहिया–लगी कुर्सी के पीछे चक्र–सी घूमती जननी की व्यथा, नाक के दोनों ओर हीरे की दो जगमगाती लोंगें, अधरों पर विजय का उल्लास, जुड़े में पुष्पवेणी। मेरे कानों में उस अद्भुत साहसी जननी शारदा सुब्रह्मण्यम् के शब्द अभी भी जैसे गूँज रहे हैं, ''ईश्वर सब द्वार एक साथ बंद नहीं करता। यदि एक द्वार बंद करता भी है, तो दूसरा द्वार खोल भी देता है।''

शिवानी

शब्दार्थ

अपराजिता	–	जो कभी पराजित न हुई हो	विधाता	–	ईश्वर
अकस्मात	–	अचानक	अभिशप्त	–	शापित
उत्फुल्ल	–	प्रसन्नता पूर्वक	अवरुद्ध	–	रुका हुआ
पीएच.डी.	–	डॉक्टर ऑफ फिलोसोफी (एक उपाधि का नाम)			

अभ्यास कार्य

पाठ से

सोचें और बताएँ

1. डॉ. चंद्रा ने कौन–कौन सी उपाधियाँ प्राप्त की थीं?
2. लेखिका ने ''नशे की गोलियाँ खाने लगा'' किस व्यक्ति के लिए कहा और क्यों?

लिखें

बहुविकल्पी प्रश्न

1. अपराजिता कहा गया है–
   (क) श्रीमती टी. सुब्रह्मण्यम् को (ख) प्रोफेसर को
   (ग) आई.ए.एस. को (घ) चंद्रा को ( )
2. डॉ. चंद्रा को माइक्रोबायोलॉजी में पीएच.डी. मिली–
   (क) 1976 ई. मे. (ख) 1977 ई. मे.
   (ग) 1967 ई. मे. (घ) 1966 ई. मे. ( )

निम्नलिखित वाक्यों में से गलत वाक्यों को सही करके लिखिए

1. 'अपराजिता' पाठ की लेखक शिवानी है।
2. डॉ. चंद्रा अदम्य साहस की प्रतिमूर्ति थी।
3. डॉ. चंद्रा की माताजी श्रीमती टी. सुब्रह्मण्यम् ने अपनी बेटी के लिए कोई साधना नहीं की।
4. हमें विपरीत परिस्थितियों में हाथ–पर–हाथ धर कर बैठ जाना चाहिए।
5. डॉ. चंद्रा का निचला धड़ काम नहीं करता था।

अति लघूत्तरात्मक प्रश्न

1. ''मैडम मैं चाहती हूँ कि कोई मुझे सामान्य–सा सहारा भी न दे'' ये शब्द किसके हैं?
2. लेखिका ने डॉ. चन्द्रा को सबसे पहले कहाँ देखा?
3. 'वीर जननी' पुरस्कार किसे मिला?

लघूत्तरात्मक प्रश्न

1. डॉ. चंद्रा की शारीरिक अक्षमता उसका साहस थी, कैसे?
2. ''ईश्वर सब द्वार एक साथ बंद नहीं करता। यदि एक द्वार बंद करता भी है, तो दूसरा द्वार खोल देता है'' चंद्रा की माता जी ने यह बात क्यों कही?
3. लखनऊ के छात्र को डॉ. चंद्रा से क्या प्रेरणा लेनी चाहिए?

दीर्घ उत्तरात्मक प्रश्न

1. अपराजिता डॉ. चंद्रा की माताजी सहृदयता और वात्सल्य की प्रतिमूर्ति थीं, कैसे? अपने शब्दों में लिखिए।
2. ''विचार परिवर्तनशील होते हैं।'' लेखिका ने ऐसा क्यों कहा था?

भाषा की बात

1. ''डॉ. चंद्रा अदम्य साहस की धनी थी'' वाक्य में 'साहस' शब्द डॉ. चंद्रा की विशेषता बता रहा है यह गुणवाचक विशेषण है। इसी प्रकार के अन्य विशेषण छाँटकर सूची बनाइए।
2. अपठित शब्द का अर्थ होता है, जो पहले से न पढ़ा हो। अपठित गद्यांश गद्य के वे अंश हैं, जो हमने पहले नहीं पढ़े हैं, ऐसे गद्यांशों को पढ़कर समझा जाता है, फिर उस पर आधारित पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दिए जाते हैं। आप भी नीचे लिखे गद्यांश को पढ़कर प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

   बाँस का यह झुरमुट मुझे अमीर बना देता है। उससे मैं अपना घर बना सकता हूँ। बाँस के बर्तन और औज़ार इस्तेमाल करता हूँ। सूखे बाँस को मैं ईंधन की तरह इस्तेमाल करता हूँ। बाँस का आचार खाता हूँ। बाँस के पालने में मेरा बचपन गुजरा। आज मेरा बच्चा भी बाँस के पालने में ही झूलता है। मैं बाँस से बनी सामग्री बेचकर जीवन यापन करता हूँ।

   (क) उपर्युक्त गद्यांश का उचित शीर्षक लिखिए।
   (ख) लेखक को अमीर कौन बना देता है?
   (ग) लेखक की जीविका कैसे चलती है?
3. निम्नलिखित शब्दों को शब्दकोश क्रम में लिखिए–

   अपराजिता, चंद्रा, चिकित्सा, लखनऊ, प्रयोगशाला, ईश्वर, पुत्री, ईंट, चींटी, प्रसिद्ध, प्रौढ़ा, आश्चर्य

पाठ से आगे

1. अपराजिता के स्थान पर आप होते तो क्या करते? सोच कर लिखिए।
2. पाठ में सम्मिलित निम्न योग्यताओं/परीक्षाओं के पूरे नाम शिक्षक से जानिए–

   बी.एससी., एम.एससी., पीएच.डी., आई.ए.एस.।
3. ऐसी अन्य उपाधियों/योग्यताओं की सूची बनाइए।

यह भी करें

1. राजस्थान में कई ऐसी संस्थाएँ हैं जो विशेष योग्यजन की चिकित्सा सहायता से जुड़ी हैं। उनका पता कीजिए और अपनी व्यक्तिगत डायरी में लिखिए। जरूरतमंद व्यक्तियों तक उक्त जानकारी पहुँचाइए।
2. इस प्रकार की कहानियों का संकलन कर साहस और सौहार्द की घटनाएँ बाल–सभा में सुनाएँ।

मन की बात

1. डॉ. चंद्रा को लेखिका ने अपराजिता कहा है। आप उसे और क्या नाम देना चाहेंगे?
2. 'मेरी माँ' विषय पर एक अनुच्छेद लिखिए।

तब और अब

नीचे लिखे शब्दों के मानक रूप लिखिए–

द्वार, बुद्धि, दीप्त, प्रसिद्ध

जानें, गुनें और जीवन में उतारें

''शिष्ट वही है, जिसका कर्म–कौशल विशिष्ट है।''